छत्तीसगढ़ राज्य की पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2013

कला व शिल्प

राज्य फोकस समूह का आधार-पत्र

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, छत्तीसगढ़, रायपुर

STATE COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING CHHATTISGARH, RAIPUR

2016 & 17

ICICI Foundation
for Inclusive Growth

विषय - सूची

1.0	प्राक्कथन	०१
2.0	विद्यालयीन शिक्षा में कला व शिल्प -वर्तमान संदर्भ	०२
3.0	छत्तीसगढ़ में चित्रकला की परम्परा	०३
4.0	छत्तीसगढ़ में लोकनाट्य	०४
5.0	छत्तीसगढ़ में रंगकर्म की परंपरा	०५
	5.1 छत्तीसगढ़ फिल्म जगत	०६
6.0	लोकगीत	०७
7.0	प्रमुख संगीत संस्थान	०८
8.0	लोकनृत्य	०९
9.0	लोक शिल्प	१०
10.0	कला शिक्षा के उद्देश्य -	
	10.1 पूर्व प्राथमिक स्तर	
	10.2 प्राथमिक स्तर	
	10.3 उच्च प्राथमिक स्तर	
	10.4 माध्यमिक स्तर	
	10.5 उच्चतर माध्यमिक स्तर	
11.0	कला शिक्षा की पाठ्यचर्या -	११
	11.1 पूर्व प्राथमिक स्तर	
	11.2 प्राथमिक स्तर	
	11.3 दृश्य कलाओं की पाठ्यचर्या -	
	11.3.1 उच्च माध्यमिक स्तर	
	11.3.2 माध्यमिक स्तर	
	11.3.3 उच्चतर माध्यमिक स्तर	
12.0	कला शिक्षा में मूल्यांकन	१२
	12.1 पूर्व प्राथमिक स्तर	
	12.2 प्राथमिक स्तर	
	12.3 उच्च प्राथमिक स्तर	
	12.4 माध्यमिक स्तर	
	12.5 उच्चतर माध्यमिक स्तर	
13.0	कला शिक्षा और शिक्षक- शिक्षा	१३
14.0	शिक्षा में हस्त शिल्प	१४
15.0	ललित कला पाठ्यक्रम	१५
16.0	गतिविधियाँ	१६

1.00 अपनी बात .....

शिक्षा की उपलब्धता जितनी आवश्यक है उतनी ही आवश्यक है उसकी गतिशीलता और सार्थकता। शिक्षा का स्वरूप ऐसा हो जिससे बच्चे अपने साथियों, समाज और प्रकृति से गहरी संवेदना से जुड़ें। इसके लिए ऐसे विषयों का चुनाव करना होगा जिनसे बच्चे की सूक्ष्मतम संवेदनाएँ जागृत हों। कला शिक्षा यह कार्य करती है। गीजू भाई, रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा महात्मा गांधी जैसे मनीषियों का मानना है कि बौद्धिक विकास के साथ–साथ भावना का विकास भी आवश्यक हैं। ये सभी आज भी प्रासंगिक है। कला सीखने का आशय केवल चित्र, गीत, संगीत या नृत्य, नाटक से नहीं है। कला शिक्षा का उद्देश्य बच्चों के चरित्र उनके सामाजिक और सौन्दर्य बोध का विकास करना है। कला की बुनियाद बचपन से ही डालनी होगी। जो गला बचपन में सध जाता है, उसमें गीत, संगीत, स्वर सदा के लिए समा जाते हैं। बचपन में ही विभिन्न कलाओं की ओर बच्चों का ध्यानाकर्षण न कराया जाए तो बड़े होने पर कला उन बिरलों को ही मिलती है, जिनमें कुछ विशेष प्रतिभा होती है। हमारा प्रदेश विभिन्न कलाओं और शिल्पों से समृद्ध है। कक्षाओं में, विषयों में इसे कैसे जीवन्त किया जाए ? इसे लेकर हमारी प्रतिबद्धताएँ है और चुनौतियाँ भी। बच्चों की आयु, क्षमताओं, उम्र के अनुसार कला शिक्षा व हस्तशिल्प को लेकर विविध गतिविधियाँ कक्षाओं में रचनी होंगी। यह भी तय करना होगा कि कैसे कला एवं शिल्प विभिन्न विषयों जैसे – भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि की कक्षाओं को रोचक बनाकर सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में उत्पन्न तनाव को कम करें तथा सभी बच्चों की सहभागिता सुनिश्चित कर सकें। कुछ ऐसे ही सवालों से आप आगे भी रू–ब–रू होंगे।

यह सब कैसे संभव होगा कुछ विचार हैं, कुछ संकल्प भी हैं जो कहते हैं कि हर स्कूल के लिए कला शिक्षक हो या न हो और यह भी जरूरी नहीं कि हर शिक्षक कलाकार हो, पर यह अपेक्षा है कि शिक्षकों की दृष्टि कलात्मक हो, सौन्दर्य बोध से युक्त हो जिससे शिक्षक पूरी संवेदना के साथ बच्चे की कलात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करे। इस प्रारूप में किसी निश्चित शिक्षण पद्धति की चर्चा नहीं की गयी है। हमारा मानना है कि शिक्षक बच्चों की प्रकृति और उनके सांस्कृतिक संदर्भों में उपलब्ध साधनों के आधार पर ही अपनी शिक्षण पद्धति तैयार करें।

इस प्रारूप में प्रदेश की कलाओं, सांस्कृतिक विरासतों, शिल्पों के साथ–साथ विभिन्न स्तरों पर कला शिक्षा के उद्देश्यों व विषय–वस्तु की चर्चा की गयी है जिसके केन्द्र में शिक्षाविदों के विचार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, शिक्षा का अधिकार व NCF – 2005 है। कला विषय पर कक्षा 1 से 5 तक की गतिविधियाँ दी गयी है। ये गतिविधियां हमें श्री शिबा प्रसाद चौधरी, विभागाध्यक्ष, मूर्तिकला, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, छत्तीसगढ़ के सौजन्य से प्राप्त हुई है।

स्कूल शिक्षा में कला कैसे आकार ले सकती है, यह इस ओर किया गया एक प्रयास है। इसके साथ ही कुछ सुझावात्मक गतिविधियाँ भी हैं जो कक्षाओं में शिक्षण प्रक्रिया को रोचक बनाने के साथ–साथ सृजनात्मकता को बढ़ावा देने में सहायक हो सकती हैं। कला शिक्षा व शिल्प आधारित इस प्रारूप को विकसित करने में हमें IFIG छ.ग., एकलव्य होशंगाबाद, इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़, राजनांदगांव के प्रो. कामताा प्रसाद त्रिपाठी, श्री शिबा प्रसाद चौधरी, विभागाध्यक्ष, मूर्तिकला, विभिन्न डाइट्स विशेषकर डाइट खैरागढ़, डाइट रायपुर, डाइट पेन्ड्रा, डाइट अम्बिकापुर, समुदाय के विभिन्न संवर्गों, विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षाविदों, कलाकारों, अभिभावकों,यूरोपियन यूनियन सह राज्य समर्थित कार्यक्रम की टीम का अकादमिक सहयोग प्राप्त हुआ है। इन सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। विद्यालयीन शिक्षा के लिए कला एवं शिल्प पर तैयार किया गया यह प्रारूप आपको सौंपा जा रहा है। आप अपने सुझाव, अभिमत हमें लिख भेजें जिससे इस प्रारूप को और भी बेहतर स्वरूप दिया जा सके।

सुधीर कुमार अग्रवाल
संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद, छत्तीसगढ़,
शंकर नगर, रायपुर

2.00 विद्यालयीन शिक्षा में कला व शिल्प-वर्तमान संदर्भ

कला और हस्तशिल्प को स्कूल शिक्षा से जोड़ने की अनुशंसाएं विभिन्न आयोगों, शिक्षाविदों, NCF 2005, शिक्षा के अधिकार के माध्यम से बार–बार की गयी हैं। यह भी कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास हो तो हमारे पाठ्यक्रम में कला का स्थान पढ़ाई–लिखाई के अन्य विषयों की तरह होना चाहिए।

स्कूलों में कला शिक्षा क्यों ? NCF–2005 का एक जवाब है – ''हमें अपनी अनूठी सांस्कृतिक पहचान को, उसकी विविधता और समृद्धता को बचाये रखना है तो औपचारिक शिक्षा में कला शिक्षा को महत्व देना होगा।''

कला व शिल्प की शिक्षा को लेकर हमारे स्कूलों व कक्षाओं में क्या कुछ चल रहा है, इस पर दृष्टि डालें तो कुछ प्रश्न उभरते हैं –

- क्या हम मानते हैं–कला व शिल्प में सभी बच्चों को शामिल किया जा सकता है ? या यह केवल कुछ प्रतिभावान बच्चों या कमजोर बच्चों के लिए है ?
- शिक्षा क्या सभी बच्चों को कलात्मक अभिव्यक्ति के अवसर देती है ? सभी बच्चे कलात्मक ज्ञान के साथ स्कूल आते हैं, क्या पढ़ने, लिखने के नाम पर हम उनकी कलात्मक क्षमताओं को नष्ट कर देते हैं ?
- क्या कला शिक्षा बच्चों को कला संबंधी उपकरणों / सामग्री से जुड़ने के अवसर प्रदान करती है ?
- क्या कला व शिल्प की शिक्षा भाषा, गणित, विज्ञान की कक्षाओं को रोचक व प्रभावी बना सकती है ?
- क्या बच्चों की आयु, क्षमताओं, उम्र के अनुसार कला शिक्षा व हस्तशिल्प को लेकर विविध गतिविधियां कक्षाओं में रची जा सकती हैं।
- कला की गतिविधियों के लिए सामग्री चयन, भण्डारण, वितरण, रख–रखाव, सफाई आदि की व्यवस्था सहजता से की जा सकती है।
- बच्चों की कलात्मक अभिव्यक्ति के प्रत्येक चरण को प्रोत्साहित करने में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्या शिक्षक इसका निर्वाह कर रहा है ?
- क्या शिक्षक बच्चों के स्वभाव, अनुभव, भावनात्मक व बौद्धिक विकास के अनुरूप उनकी विशेष जरूरतों को पहचानते हैं, उनका सम्मान करते हैं और कला शिक्षा के अवसर रचते हैं ?
- क्या सभी शिक्षक बच्चों के कला व शिल्प संबंधी कार्यों का उचित मूल्यांकन करते हैं ?
- क्या हमारे स्कूलों में, कक्षाओं में कला व शिल्प हाशिए पर है, या विशेष अवसरों जैसे – 15 अगस्त, 26 जनवरी, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तक ही इन्हें सीमित रखा जाता है ? इन पर मंथन करने की जरूरत है।
- कला व शिल्प को लेकर हमारे अपने सन्दर्भ क्या हैं ? इन सबसे बढ़कर क्या हम अपने और बच्चों के सांस्कृतिक सन्दर्भों को समझते हैं और भी प्रश्न होंगे, इन सभी के जवाब तलाशने होंगे, जिससे एक क्रियाशील योजना तैयार हो सके और कला शिक्षा व शिल्प कक्षाओं में, विषयों में जीवन्त हो सके। शिक्षा व्यवस्था बच्चों को उनके सांस्कृतिक सन्दर्भो से अलग कर पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकती है। हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है, इसे पहचान कर कक्षाओं में स्थान देना होगा। कुछ और भी बातें है जो कला से जुड़ी है और समझ को विस्तारित करती है। कला व्यक्तियों के माध्यम से समाज का निर्माण है। कला पर्यावरण से संबंधित है और प्राकृतिक संसाधन, सांस्कृतिक साधनों की नींव है।

हमारे समाज में लोक व्यवहार की शिक्षा का प्रचार प्रसार कला की विभिन्न विधाओं के द्वारा सैकड़ो वर्षों पूर्व से होता आ रहा है। इन विधाओं के द्वारा नैतिक शिक्षा, सामाजिक मूल्य और उत्तम आचरण जैसे गंभीर अध्यापन बिन्दु बड़ी सरलता और सहजता से प्रदर्शित किए जाते रहे हैं। ये विधाएँ समाज में शिक्षा का प्रसार करती हैं।

जिसके प्रभाव से सामाजिक गुणों का विकास होता आ रहा है। यह चिन्तन का विषय हो सकता है कि कला की विविध विधाएँ किस तरह शालेय शिक्षा के विभिन्न आयामों की परिपूरक हो सकती हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य में लोक संस्कृति, लोक कलाओं का निर्वहन आज तक होता आ रहा है। यहां अलग–अलग मौसम में विभिन्न त्यौहारों के अवसर पर अलग–अलग विधाओं का सामाजिक प्रदर्शन अलग–अलग वर्ग विशेष के द्वारा होता है।

- इन समस्त विधाओं का आधार इनकी सामूहिक प्रस्तुति है। जिसे समाज में लोकप्रियता और स्वीकार्यता प्राप्त है। छत्तीसगढ़ में इन सर्वव्याप्त विधाओं का उपयोग शालेय शिक्षा में किया जाए तो अध्ययन–अध्यापन अधिक प्रभावी हो सकता है। इससे बच्चा अपनी चिर परिचित भाषा और अंदाज में अध्ययन कर सकेगा। अपनी संस्कृति से जुड़ा रहेगा। अध्ययन अध्यापन सुरूचिपूर्ण और सक्रिय होगा। छत्तीसगढ़ की कुछ कलाओं व शिल्पों का विवरण इस प्रकार है।

3.00 छत्तीसगढ़ में चित्रकला की परंपरा

छत्तीसगढ़ की लोक चित्रकला -

छत्तीसगढ़ में चित्रकला के अन्तर्गत आदिम मानव के बनाए हुए रेखाचित्रों से लोकचित्रों के उद्‌भव व विकास की यात्रा का अविरल प्रवाह है।

छत्तीसगढ़ की चित्रकला मुख्य रूप से भित्तिचित्र व भूमि रेखांकन के माध्यम से दिखाई देती है। ग्रामीण क्षेत्रों में मिट्‌टी की दीवारों पर लोक चित्रकार विभिन्न प्रकार से रेखाचित्र बनाते हैं। छत्तीसगढ़ में इसे कई अलग–अलग नामों से जाना जाता है व पर्वों के आधार पर बनाया जाता है। जैसे बेतिया, बिहई चौक, डंडा चौक, चांदनी, संकरी, साथिया, कमलगट्‌टा, हांडा, चकरीखूट, पंडुम, गोलावारी, संखचूर, मखना–बानी, कांदापान, कुसियारी, मानिक, पिढ़हाई, पुरइन पान, समुंद लहर, लक्ष्मी पांव आदि।

(1) डंडा चौक – सामान्य पूजा पाठ या किसी खास प्रयोजन जैसे दशहरा की पूजा में इस चौक को बनाया जाता है। आटे से या कभी–कभी धान से भी इस चौक को पूरा किया जाता है। इसके ऊपर पीढ़ा रखकर पूजा प्रतिष्ठा की जाती है।

(2) बिहई चौक – विवाह के समय इस प्रकार के चौक को मायन के दिन पांच दल वाला चौक कन्या तथा सात दल वाला चौक वर के घर बनाया जाता है। इसमें चावल आटे का उपयोग किया जाता है।

(3) छट्‌ठी चौक – शिशु जन्म के छठे दिन छट्‌ठी मनाई जाती है। इस दिन वर्तुलाकार चौक बनाकर इस पर होम–धूप दिया जाता है। शिशु के बढ़ने की प्रक्रिया को ध्यान में रखकर इसे बनाया जाता है।

(4) गुरूवारिया चौक – इस तरह के चौकों को अगहन गुरूवार का व्रत करते समय बनाया जाता है। इसके बीच में देवी लक्ष्मी के पाँव का चित्र बनाए जाते हैं व चारों ओर स्वास्तिक का चिन्ह बनाया जाता है।

(5) भित्ति चित्र – जिन दिनों मानव गिरी–कंदराओ में रहा करता था तभी वह दीवारों को रंगने की कला को सीख गया था। रायगढ़ के पास स्थित कुबरा पहाड़ की गुफाओं की भित्ती शैली इसके स्पष्ट उदाहरण है।

(6) द्वार सज्जा – प्रदेश में परम्परा है कि घरों में दरवाजे के तीनों ओर एवं नीचे के देहरी को आकर्षक ढंग से सजाते हैं। घर की महिलायें जब त्यौहारों पर घर की लिपाई–पुताई करती हैं तब चौखट के चारों ओर की सजावट भी करती हैं। इनमें रंगों, चूना, नील, पीली मिट्‌टी, काली मिट्‌टी का उपयोग किया जाता है।

(7) कोठी सज्जा – छत्तीसगढ़ में अन्न भंडार को कोठी या ढोली और बड़े आकार के भंडार को ढाबा कहा जाता है। ढोली या कोठी आकार में छोटी होती है और मिट्‌टी की बनी होती है। लोग इस पर भी अपने सौंदर्य बोध व कलात्मकता के भाव को आकार देते हुए कुछ न कुछ प्रतीक या घटना को मिथक के रूप में उकेर देते हैं।

(8) आठे कन्हैया – भादों मास के आठे (अष्टमी) को कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व छत्तीसगढ़ अंचल में काफी धूमधाम से मनाया जाता है। इसे यहां आठे कन्हैया कहा जाता है। इस अवसर पर श्री कृष्ण से संबंधित विभिन्न घटनाओं का चित्रांकन किया जाता है।

(9) हाथा – हाथ से बनाये गये थापों को हाथा कहा जाता है। छत्तीसगढ़ में आमतौर पर दो अवसरों पर हाथा बनाया जाता है। एक तो नये घर बनाए जाने पर प्रतिष्ठा करते समय, दूसरा हाथा राउत जाति की महिलाओं द्वारा गोर्वधन पूजा के समय बनाया जाता है।

(10) छपाई कला ''गोदना'' – सरगुजा की प्रसिद्ध कला गोदना जो प्राचीन समय में आदिवासी मान्यतानुसार शरीर पर उकेरी जाती थी जिसमें सुई एवं रंगों के माध्यम से शरीर के अंगों पर पशु–पक्षियों के चित्र, मानव श्रृंखला की आकृतियां, फूलपत्तियां एवं नाम को लिखा जाता था परंतु वर्तमान परिपेक्ष्य में इसका स्वरूप बदलता गया। अब यह कॉटन, कोसा, टसर सिल्क जैसे कपड़ों पर प्रिंट किया जाता है। इसे गोदना प्रिंट कहते हैं। प्रदेश में कुशल कलाकारों द्वारा गोदना प्रिंट की कला निर्माण का कार्य किया जा रहा है ।

4.00 छत्तीसगढ़ में लोकनाट्य

छत्तीसगढ़ी लोकनाट्यों से हमारा अभिप्राय उन नाटकों से है जो यहां के ग्राम्य वातावरण में अंकुरित और विकसित हुए हैं। इस प्रकार के नाटकों में रंग–मंचीय शास्त्रीयता नहीं, इनमें अभिनय की सरलता एवं आडम्बरहीनता मिलती है। ये जन साधारण के द्वारा सर्व साधारण के मनोरंजनार्थ अभिनीत होते हैं। छत्तीसगढ़ी लोकनाट्यों के पात्र पुरूष ही होते हैं। इनकी भाषा भी छत्तीसगढ़ी होती है। इससे भावों का सहज संप्रेषण हो जाता है। इनके पात्र ऐतिहासिक एवं पौराणिक भी होते हैं। पात्र यहां की जन–संस्कृति के अनुरूप अभिनय करते हैं जिससे उनके द्वारा यहां की संस्कृति का सुंदर संवहन होता है। कुछ प्रमुख लोक नाट्य इस प्रकार हैं –

(1) रहसलीला – छत्तीसगढ़ लोकनाट्यों में ''रहसलीला'' का विशेष स्थान है। ये भारतीय संस्कृति की मुख्य धारा से छत्तीसगढ़ के संबंध को उजागर करते हैं। रहसलीला श्रीमद् भागवत में वर्णित राधा–कृष्ण की रासलीला की कथा के गान का रूप है।

(2) गम्मत – छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य ''गम्मत'' प्रहसन का पर्याय जान पड़ता है। इसका मुख्य उददेश्य दर्शकों के मनोरंजन के साथ–साथ हास्य व्यंग्य की शैली में सामाजिक बुराईयों और पाखंडों पर प्रहार करना होता है। यह लोकनाट्य लोक चेतना के जागरण का एक कलात्मक उपक्रम है। गम्मत में प्रस्तुत कथा अलिखित होती है। लोक जीवन के दुःख–दर्दों को लेकर पाखंड, अर्थ लोलुपता, छुआछूत, दहेज और नशाखोरी जैसी विद्रूप दशाओं पर गम्मत की कथा आधारित होती है। उनसे विद्रूपताओं पर प्रहार होता है।

(3) नाचा – छत्तीसगढ़ का लोकप्रिय लोकनाट्य है – ''नाचा''। यह लोकानुरंजन की प्रमुख विधा है। इसे कहीं छैलानृत्य तो कहीं छैला पार्टी भी कहा जाता है। नाचा छत्तीसगढ़ का सर्वाधिक प्रासंगिक लोकनाट्य है। नाचा के प्रमुख कथा प्रसंग है – सास–बहू का झगड़ा, देवरानी–जेठानी का विवाद – संवाद, पति–पत्नी का झगड़ा एवं प्रेम, ननद–भौजाई की छेड़छाड़ और प्रसंग आदि। नाचा का आयोजन खुले मंच पर किया जाता है। नाचा का उद्देश्य मनोरंजन के साथ जनजीवन को सही दिशा दिखाना होता है।

(4) मावोपाटा– मावोपाटा मुरिया जनजाति का एक अद्भुत शिकार नृत्य है। इस नृत्य के दौरान लोक नृत्य–वाद्य ''टिमकी'' और ''कोटोड़का'' बजाया जाता है। बस्तर के आदिम जीवन में मुरिया जनजाति का यह लोकनाट्य अपनी संपूर्ण पारंपरिकता के साथ मंच पर प्रस्तुत होता है।

(5) भतरा नाट–भतरा नाट्य नृत्य प्रधान लोकनाट्य है। भतरानाट को उड़िया नाट भी कहा जाता है क्योंकि इसका आगमन ओडीशा से हुआ है। छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग में भतरा नाट का आयोजन प्रमुख रूप से किया जाता है। विस्तृत मैदान में खुले मंच पर ग्रीष्म ऋतु में आयोजित होने वाले भतरानाट के कथानक प्रमुख रूप से पौराणिक होते हैं। जिसमें मेघनाद शक्ति, लंका दहन, जरासंध वध, कीचक वध, रावण वध एवं अभिमन्यु वध आदि प्रमुख हैं। इस नाट की मुख्य भाषा ''भतरी'' होती है।

(6) खम्म स्वांग–कोरकू जनजाति में आयोजित होने वाला यह लोकनाट्य दीपावली के बाद प्रारंभ होता है। इस लोकनाट्य में लंकापति रावण के पुत्र मेघनाद की स्मृति में कोरकू ग्राम के मध्य एक मेघनाथ खम्भ–स्थापित किया जाता है और इसी के आसपास कोरकू जनजाति के लोग नवीन खेल खेलते हैं। कोरकू जनजाति मेघनाद को अपना रक्षक मानती है।

(7) दहिकांदो– छत्तीसगढ़ के आदिवासियों के मध्य दहिकांदो एक लोकप्रिय लोकनाट्य है इस नाट्य में प्रभु श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के अवसर पर किसी वृक्ष के नीचे कृष्ण–राधिका की प्रतिमा स्थापित कर अति सुंदर कृष्ण लीला का मंचन होता है। वस्तुतः यह करमा और रास का सम्मिलन भी कहा जा सकता है। यह लोकनाट्य अद्भुत उत्साह एवं धार्मिक मर्म से ओतप्रोत है।

छत्तीसगढ़ के अन्य लोकनाट्य –

1. नकटा और नकटी
2. कोकटी–घोड़ा
3. पुतलिका
4. सांभर खेल
5. मांदरी नृत्य
6. महला संस्कार

5.00 छत्तीसगढ़ के रंगकर्म की परंपरा

छत्तीसगढ़ में रंगकर्म का इतिहास मौर्यकाल में निर्मित जोगीमाड़ा गुफा से प्रारंभ होता है, जो रामगढ़ की पहाड़ी पर स्थित है। ऐतिहासिक कालखंड के अनुसार यह गुफा ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी की मानी गई है। 18वीं शताब्दी का पूर्वार्ध छत्तीसगढ़ के रंगकर्म के इतिहास का युगांतर कालीन दौर था जब मराठा रंगकर्म, गम्मत व नाचा आदि की विधाओं का पूर्ण विकास हुआ। अगस्त 1919 में जन्मी इप्टा रायपुर के रंगकर्म से जुड़ी अत्यंत महत्वपूर्ण संस्था है। यह अपनी प्रस्तुतियों द्वारा लगातार धर्म निरपेक्ष एवं लोकतांत्रिक मूल्यों के लिये संघर्ष करती आ रही है। यह संस्था मुक्तिबोध नाट्य स्पर्धा आयोजित कर रही है। नुक्कड़ नाटक, नाट्य शिविर, कविता, पोस्टर, प्रदर्शनी नाट्य गोष्ठियां और जनगीतों के माध्यम से इप्टा सतत् सांस्कृतिक आयोजन का संचालन करती आ रही है। हबीब तनवीर, सत्यदेव दुबे छत्तीसगढ़ के प्रमुख रंगकर्मी रहे हैं।

थियेटर –

थियेटर जिसे गम्मत के नाम से जानते हैं। पंडवानी (Lyrical form of theater) माना जाता है। पंडवानी छत्तीसगढ़ का प्रसिद्ध लोकनाट्य है। जिसमें सामान्यतः महाभारत की कला का गायन किया जाता है।

5.1 छत्तीसगढ़ फिल्म जगत

इस क्षेत्र की गायन, नृत्य, नाट्य व अन्य सांस्कृतिक कलाएँ समृद्ध रही हैं। छत्तीसगढ़ी में फिल्मों का निर्माण इसी सांस्कृतिक विकास का प्रयास है। प्रथम छत्तीसगढ़ी फिल्म ''कहि देबे संदेश'' है तथा सर्वाधिक सफल एवं रंगीन फिल्म ''मोर छइंयां भुईंयां'' है। आज छत्तीसगढ़ी फिल्म जगत अत्यंत समृद्ध और लोकप्रिय है।

6.00 छत्तीसगढ़ के लोकगीत -

1. करमा गीत – करमा नृत्य के साथ जो गीत गाए जाते हैं वे करमा गीत कहलाते है। ये गीत आनंद और मनोरंजन के लिए होते हैं।
2. डंडागीत – ''डंडा नाच'' छत्तीसगढ़ का प्रिय नृत्य है। इस नृत्य के साथ जो गीत गाए जाते हैं उन्हें डंडा गीत कहा जाता है। डंडा नृत्य केवल पुरूषों का नृत्य है। यह होली के त्यौहार के समय प्रमुखतः नाचा जाता है एवं साथ में गीत भी गाए जाते हैं।
3. ददरिया – ददरिया गीतों को गीतों का राजा कहा जाता है इसे ''बन भजन'' अथवा साल्हा भी कहते हैं। छत्तीसगढ़ के ददरिया गीत, खेतों, खलिहानों में कृषि कार्य करते हुए अथवा अन्य श्रम के कार्य करते समय गाए जाते हैं।
4. बाँसगीत – राऊत जाति का यह प्रमुख गीत है। ये कृष्णानुयायी होने के कारण ही बंशी से इन्हें विशेष स्नेह है। इनके पास लम्बे मोटे बाँस की बनी हुई एक बहुत बड़ी बांसुरी होती है, जिसे बाँस कहा जाता है। इसी बाँस को बजाकर ये गीत गाते हैं।
5. देवार गीत – देवार जाति के लोग व्यवासायिक लोक संगीतकार एवं लोक कलाकार हैं। नाच गा कर, बंदर भालू आदि के खेल दिखाकर ये लोगों का मनोरंजन करते हैं।
6. पंथीगीत – पंथीगीत में मुख्यतः गुरुघासीदास जी की जीवनी तथा उनके उपदेशों का वर्णन होता है।
7. जंवारागीत – छत्तीसगढ़ के जंवारा शक्ति का प्रतीक है। नवरात्रि पर्व में पाँच या सात प्रकार के बीज डालकर इसे बोया जाता है। जंवारा के सेवक इस अवसर पर जंवारा गीत गाते हैं।
8. भोजली – श्रावण में जब चारों ओर हरियाली बिखर जाती है तब श्रावण शुक्ल नवमी को भोजली बोई जाती है। टोकरियों, छोटे मिट्टी के घड़ों में बीजों को अंकुरित किया जाता है। इसे ही भोजली बोना कहते हैं। इसमें अंकुरित पौधों की पूजा की जाती है। इस अवसर पर तांत का बना एक वाद्य यंत्र बजाकर महिलाओं द्वारा गीत गाए जाते हैं। भोजली गीतों में भोजली का बढ़ना और उसकी पूजा का विशेष महत्व है।
9. विवाह गीत – विवाह के अवसर पर विभिन्न प्रकार के गीत गाए जाते हैं जिनमें से प्रमुख है चुलमाटी, तेलचघी, मायगौरी, नहडोरी, भड़ौनी, परघनी आदि।
10. सुआ गीत – सुआ गीत फसल पकने पर दीपावली के समय गाया जाता है। ये गीत महिलाओं द्वारा गाए जाते हैं।

7.00 प्रमुख संगीत संस्थान

छत्तीसगढ़ का अतीत सदैव संगीत साधना का प्रमुख स्थल रहा है। कला सम्राट राजा चक्रधर सिंह हो या कमलनारायण सिंह या राजा दृगपाल सिंह हो या राजा भूपदेव सिंह सभी ने संगीत साधना के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था की थी। इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ छत्तीसगढ़ का ही नहीं अपितु देश एवं संपूर्ण एशिया में अपनी तरह का विशिष्ट कला संस्थान है, जहां संगीत एवं ललित कलाओं की विधिवत शिक्षा दी जाती है। रायपुर का कमला देवी कला संगीत महाविद्यालय एवं श्रीराम संगीत महाविद्यालय प्रमुख संगीत संस्थान हैं। बिलासपुर में स्थित भातखंडे संगीत महाविद्यालय तथा राजनांदगांव एवं कवर्धा में स्थापित शारदा संगीत महाविद्यालय भी राज्य के प्रमुख संगीत संस्थान हैं। राज्य की लौह नगरी भिलाई जहां पर दक्षिण भारतीयों की अधिक संख्या है वहां दक्षिण भारतीय संगीत का एक प्रमुख केन्द्र भी स्थापित है।

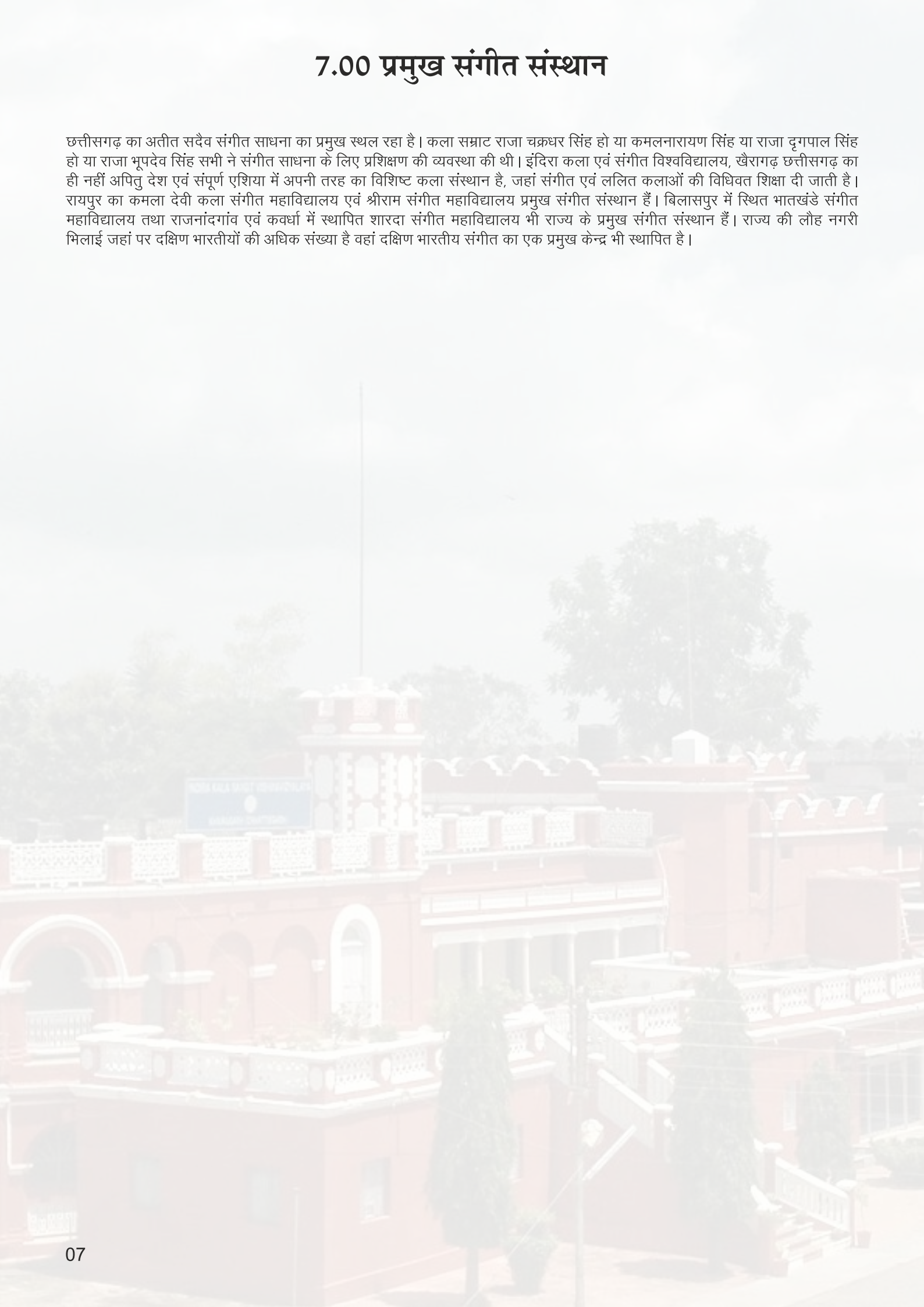

8.00 लोकनृत्य -

लोकनृत्य में छत्तीसगढ़ की लोककला का प्राणत्व है। छत्तीसगढ़ के प्रमुख लोकनृत्य सुआ, करमा, पंथी, राउत–नाचा, नाचा, चंदैनी, गेड़ी नृत्य, परब नृत्य, दोरला, हुलकी व मांदरी नृत्य, ककसार, सरहुल, सैला आदि हैं। वस्तुतः गीत, संगीत और नृत्य, छत्तीसगढ़ के जीवन में रचे बसे हैं।
कुछ प्रमुख नृत्य इस प्रकार हैं –

1. सुआ नृत्य – महिलाए व किशोरियाँ यह नृत्य बड़े ही उत्साह व उल्लास से उस समय प्रारंभ करती हैं, जब धान के पकने का समय पूर्ण हो जाता है।
2. पंथी–नृत्य – छत्तीसगढ़ में निवास करने वाली सतनामी सम्प्रदाय का यह परंपरागत नृत्य है। माघ महीने की पूर्णिमा को गुरू घासीदासजी के जन्मदिन पर सतनामी सम्प्रदाय के लोग जैतखाम की स्थापना करके उसका पूजन करते हैं और फिर उसी के चारों तरफ गोल घेरा बनाकर गीत गाते हैं, और नृत्य करते हैं।

3. राउत नाचा – दीपावली के तुरंत बाद राऊत जाति द्वारा नृत्य का सामूहिक आयोजन किया जाता है। वे समूह में सींग बाजा के साथ जिनके पशुधन की देखभाल करते हैं, उनके घर जाकर नृत्य करते हैं। राऊत जाति का प्रिय नृत्य लाठी या डंडा नृत्य होता है। इसका मुख्य वाद्य नगाड़ा या टिमकी होता हैं। इस नृत्य में दोहे बोले जाते हैं।

काला पानी जमुनाजी के, लक्ष्मण देखि डराय हो।
एक पुत्र अंजनी के भैया, छिन आवय छिन जाए हो।

4. चंदैनी नृत्य – छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में लोक कथाओं पर आधारित यह एक प्रमुख लोकनृत्य है। लोरिक चंदा के नाम से ख्यातिलब्ध चंदैनी मुख्य रूप से एक प्रेमगाथा है। जिसमें पुरूष पात्र विशेष पहनावे में अनुपम नृत्य के साथ चंदैनी कथा को अत्यंत ही सम्मोहक शैली में प्रस्तुत करते हैं।

5. जनजातीय नृत्य – जनजातीय परम्पराओं में नृत्य का बहुत महत्व है। जनजातीय जीवन का उल्लास एवं उनके आनंद का चरम उनके नृत्यों की थाप में बसता है। प्रकृति की गोद में पलने बसने वाला वनवासी अपनी परम्परागत संस्कृति का अनुसरण करता है।

5.1 करमा – करमा नृत्य ,कर्म देवता को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है। करमा नृत्य का क्षेत्र बहुत विस्तृत है।

5.2 करसाड़ – यह अबुझमाड़ियों का एक विशेष पर्व है जिसमें गोत्रदेव की पूजा की जाती है। इस अवसर पर यह नृत्य किया जाता है। करसाड़ नृत्य में नर्तक की रूप सज्जा विशेष आकर्षक होती है।

5.3 परघौनी – आदिवासियों के कुछ नृत्य ऐसे हैं जो एक विशेष अवसर और अनुष्ठान से संबंधित होते हैं। बैगा आदिवासियों में ''परघौनी '' नृत्य विवाह के अवसर पर किया जाता है।

5.4 दशहरा नृत्य और ददरिया –यह नृत्य बैगा आदिवासियों में प्रचलित है। बैगा आदिवासियों में दशहरे का पर्व नहीं मनाया जाता किन्तु विजयादशमी के दिन से प्रारंभ होने के कारण नृत्य का नाम दशहरा नृत्य पड़ा।

5.5 सैला नृत्य – इस नृत्य का पूरा नाम सैलारींवा है। इस नृत्य की शुरूआत शरद पूर्णिमा से होती है। सैला मुख्य रूप से गोंड़, बैगा, परधान आदि जनजातियों में किया जाता है।

5.6 दोरला नृत्य – बस्तर की दोरला जनजाति का प्रमुख नृत्य है। इस नृत्य में स्त्री पुरूष दोनों सहभागी रहते हैं। मुख्य रूप से यह एक पारंपरिक नृत्य है जिसमें पुरूष पंछे (रूमाल) एवं स्त्रियां पारंपरिक आभूषण पहनती हैं।

5.7 फाग नृत्य – यह छत्तीसगढ़ का लोकप्रिय लोकनृत्य है। आदिवासी समुदाय के गोड़ एवं बैगा जनजाति के लोग विशेष रूप से होली के अवसर पर आयोजित करते हैं। इस नृत्य में लकड़ी के मुखौटे एवं लकड़ी की चिड़िया आदि का प्रयोग करते हुए गांव के समस्त युवक–युवती एवं प्रौढ़ भी उल्लास के साथ हिस्सा लेते हैं। विभिन्न स्वरूपों में यह नृत्य आज हर समुदाय में प्रचलित है।

9.00 लोक शिल्प -

छत्तीसगढ़ के कलाकार, मिट्टी, बाँस, पीतल, लोहा, लकड़ी आदि से विभिन्न प्रकार की आकर्षक वस्तुएँ बनाते हैं। इनमें विशेष आकृतियाँ बनाकर रंग–सज्जा, बेल–बूटे, फूल–पत्ती एवं जानवर आदि उकेर कर आर्कषक बनाया जाता है। इनके द्वारा बनाई गई चीजें बाजारों में ऊँचे दामों पर बिकती हैं। छत्तीसगढ़ राज्य के शिल्प कला की पहचान देश–विदेश में है। राज्य के कुछ प्रमुख शिल्प इस प्रकार हैं –

काष्ठ शिल्प –

लकड़ी को गढ़कर विभिन्न चीजें बनाना बस्तर अंचल की प्रसिद्ध कला है। बस्तर अंचल में चाकू, हंसिया, खेती के औजारों के मूँठ, लकड़ी के पीढ़े, कंघियाँ, बाँसुरी तथा सजावट की सभी चीजों में नक्काशी अत्यंत कलात्मक होती है। घरों के नक्काशीदार स्तंभ व दरवाजे, मंदिरों के खंभे, देवझूला आदि काष्ठ शिल्प के अद्‌भुत नमूने हैं। साथ ही लोक नृत्यों में उपयोग किए जाने वाले लकड़ी के मुखौटे भी बहुत कलात्मक होते हैं।

मृदा शिल्प –

मिट्टी के बर्तन, देव प्रतिमाएँ, अनाज रखने की कोठियाँ, दीप स्तंभ आदि बनाने की कला छत्तीसगढ़ में आज भी बरकरार है। बस्तर के टेराकोटा का शिल्पकला में विशेष स्थान है। इस शिल्प में जीवन और प्रकृति से जुड़ी वस्तुओं के साथ ही धार्मिक प्रतीकों की आकृतियाँ भी बनाई जाती हैं। इन कलाकृतियों की लोकप्रियता देश के कोने–कोने तक पहुँच चुकी हैं।

धातु शिल्प –

पारम्परिक शिल्प में लौह शिल्प का प्रमुख स्थान है। बस्तर के लौह शिल्पी देवी–देवताओं की पूजा–आराधना के लिए विभिन्न कलाकृतियों का निर्माण करते हैं। लौह शिल्प का उपयोग सजावटी सामग्री के रूप में भी काफी लोकप्रिय है।

घड़वा शिल्प –

बस्तर में घड़वा जाति के लोग काँसे व पीतल की कलाकृतियाँ बनाते हैं। धातुओं को पिघलाकर साँचों की मदद से कई प्रकार की आकृतियाँ बनाते हैं। इसे घड़वा शिल्प कहा जाता है।

बाँस शिल्प – बाँस की विभिन्न आकारों की टोकरियों को लोगों द्वारा अलग–अलग तरह से उपयोग किया जाता है। विवाह व अन्य धार्मिक कार्यों में भी इनका उपयोग किया जाता है। छत्तीसगढ़ में विवाह हेतु बाँस से कलात्मक झाँपी,(एक प्रकार की कलात्मक ढक्कनदार टोकरी) पंखे और दूल्हे के सिर पर लगाए जाने वाले मौर (मुकुट) बनाए जाते हैं।

रजवार भित्ति शिल्प – रजवारों की गृहसज्जा शैली अद्‌भुत है। घर की खिड़कियों और बरामदे के लिए सुंदर जालियाँ बनाई जाती हैं। इनके अलावा दीप, सर्प, पशु–पक्षी आदि की कलाकृतियाँ भी बनाई जाती हैं। सफेद मिट्टी और स्थानीय रंगों से कलाकृतियों को जीवन्त किया जाता है।

10.00 कला शिक्षा के उद्देश्य -

10.1 पूर्व प्राथमिक स्तर – पूर्व प्राथमिक स्तर पर कला माध्यम से शिक्षा देने का उद्देश्य मुख्यतः बच्चों में पाँचों इंद्रियों को विकसित करना है। आनंद की अनुभूति एवं परिवेश के प्रति बच्चों को संवदेनशील बनाना भी उद्देश्य होना चाहिए, इसलिये बच्चों को रंग, रोलप्ले, मिट्टी, नृत्य, रेखांकन आदि की ओर आकर्षित करवाना होगा। उनकी रूचि के अनुसार उन्हें ताल, लय, ध्वनि के साथ संगत करने हेतु प्रोत्साहित करना होगा एवं सहायता भी देनी होगी। स्वअनुभूति विकसित हो जाने पर उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे अधिक सहजता से कार्य करने लगते हैं।

इस स्तर पर बच्चों की स्वस्फूर्त गतिविधियों को प्रोत्साहित करना होगा। बच्चों को खेलने के अवसर देने होंगे जिससे उनकी सृजनात्मकता का विकास हो। उनकी मौलिक रचना को प्रोत्साहित कर उनमें आश्चर्यबोध एवं आत्म सम्मान बढ़ाने में सहायता करनी होगी। इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि संस्थान में उपलब्ध संसाधन बच्चों की पहुँच में हो। जिससे वे प्राकृतिक परिवेश के साथ–साथ मानव निर्मित वस्तुओं के प्रति भी जिज्ञासु बनें। पूर्व प्राथमिक स्तर पर कहानियों के माध्यम से परिवेश का परिचय बच्चों को दिया जा सकता है। कहानी का चयन इस तरह हो कि वे स्वयं को उसका एक पात्र समझकर अभिभूत हो सके।

10.2 प्राथमिक स्तर – बच्चों के व्यक्तित्व के बहुमुखी विकास में योगदान देना कला शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। इस स्तर पर कला शिक्षा को सभी विषयों के साथ जोड़े जाने के प्रयास करने होंगे। चित्रों के रंग, कविता के लयबोध और परिवेश में उपस्थित प्राकृतिक रंगो के बोध आदि के लिए अभिव्यक्ति के अवसर उपलब्ध करवाने होंगे। यह भी महत्वपूर्ण है कि बच्चे परिवेश के प्रति संवेदनशीलता को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त कर सकें। यहां उनका परिचय स्थानीय लोक कलाओं से भी करवाना चाहिए जिसके लिये परिवेश में उपलब्ध कलाओं के प्रति निरीक्षण और अन्वेषण को बढ़ावा देना होगा ।

कला अनौपचारिक है, जब भी किसी का कला के प्रति झुकाव होता है तब इसका सृजन होता है। हर बच्चे को अपनी इच्छानुसार कला की किसी विधा को चुनने का विकल्प होना चाहिए। विभिन्न कलाओं से बच्चे का परिचय जरूरी है।

बच्चों को परिवेश के कलाकारों, ऐतिहासिक इमारतों, खेलों आदि से परिचित करवाना होगा । जिससे क्षेत्रीय कलाओं की गति, लय और ध्वनि का अनुसरण उनके अचेतनमन में स्थापित होने लगे और वे उन्हें व्यक्त कर सकें । उनकी अभिव्यक्तियों को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। उन्हें गति, लय और रेखांकन के लिये मार्गदर्शन देना होगा परंतु उनमें नियमों की बाध्यता नहीं होनी चाहिए अन्यथा वे कुंठित हो जाएंगे। साथ ही स्थानीय परिवेश में प्रचलित कविता, गीत, नृत्य आदि के साथ अभिनय का प्रयोग करने के मौके देने चाहिए।

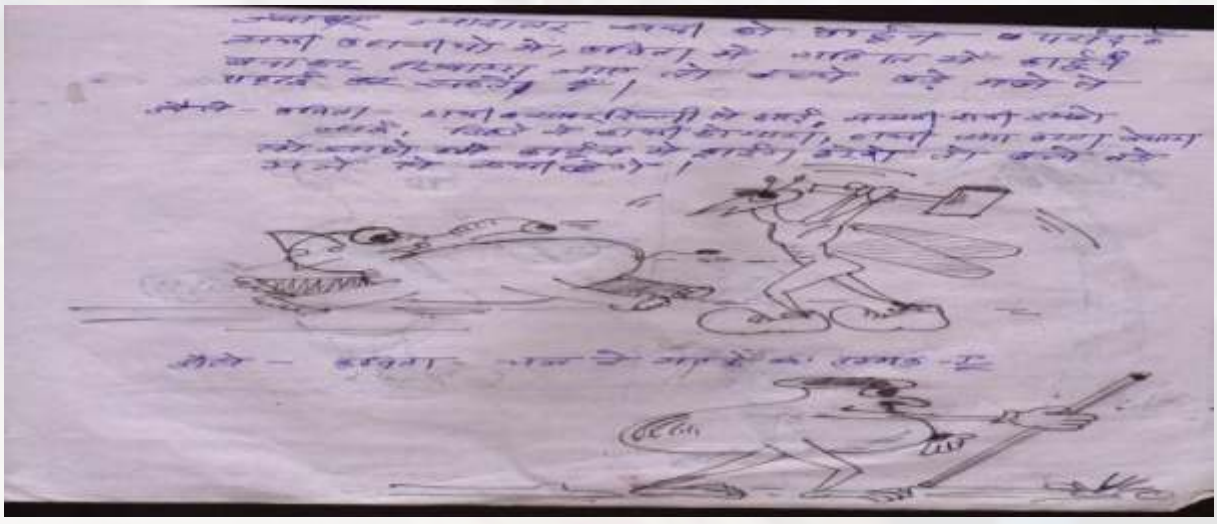

10.3 उच्च प्राथमिक स्तर – इस स्तर पर विद्यार्थियों के पूर्व सकारात्मक अनुभव विषय के प्रति रूचि पैदा कर देते हैं। यही रूचि उन्हें विशिष्ट कलाओं में नवीन खोज के लिये प्रेरित करती है। यहाँ उद्देश्य यह हो कि उनके अनुसंधान को मार्गदर्शन मिले, जिससे उनकी रुचि बढ़े। सौंदर्य बोध का सूत्रपात करना, उनकी विशिष्ट संवेदना को व्यक्त करने के तरीके को प्रोत्साहित करना इस स्तर पर कला शिक्षा का मुख्य उददेश्य होता है। धरोहर एवं कलाओं के प्रति अधिक सृजनात्मक बनाना तथा कला को जीवन के अन्य क्षेत्रों में जोड़ पाना भी महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

मोहला विकासखंड के पूर्व माध्यमिक शाला आमाटोला के छात्र भीखम ने ताजमहल का चित्र बनाकर उसे पीले रंग में रंग दिया। देखने वालों ने निष्कर्ष निकाला कि यह प्रदूषण की ओर संकेत कर रहा है कि यदि प्रदूषण न रोका जाए तो हो सकता है आने वाले दिनों में यह इमारत पीली पड़ जाएगी।

10.4 माध्यमिक स्तर – इस स्तर पर विद्यार्थियों ने अब तक जो दक्षताएँ प्राप्त की हैं उन्हें प्रभावी बनाना उद्देश्य होता है। अवलोकन की प्रक्रिया में अपनी मौलिकता को सम्मिलित कर कल्पनाशीलता को साकार रूप देना जिससे वे स्वयं की नवीन शैली और विचार को अभिव्यक्त कर सकें। आनंद के अनुभव के साथ–साथ सौंदर्य अनुभूति की महत्ता इस स्तर की प्राथमिकता होती है जिससे उनकी सृजनात्मक गतिविधियों को वृहद आयाम मिलता है। यहां वे अवलोकन, तुलनात्मक एवं समीक्षा के दृष्टिकोण विकसित कर स्वयं की कला को उत्कृष्ट करने की कवायद करते हैं। लोक कलाओं, क्षेत्रीय कलाओं एवं सांस्कृतिक घटकों की जानकारी के अवसर प्रदान करना, जिसस वे राष्ट्रीय धरोहर और सांस्कृतिक विविधता की सराहना कर सकें। कलाकारों (समुदाय) के साथ काम करने के अवसर, समुदाय में पर्व एवं उत्सव मनाना भौतिक पर्यावरण एवं आसपास के दृश्य को सजाना इत्यादि के लिए यह सही अवधि है।

यहां बच्चे कलाओं के विभिन्न स्वरूपों से परिचित हो जाते हैं अतः उनकी अभिरूचि के अनुसार उन्हें व्यावसायिक दक्षता की ओर ले जाना होगा जिससे वे इसे एक विषय के रूप में महत्व देकर आगे बढ़ सकें।

विद्यार्थियों को कला व शिल्प के नये माध्यमों एवं नवीन तकनीकों से अवगत कराना जो उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं सामान्य जरूरतों की वस्तुओं को बनाने में सहायक सिद्ध हो सकें।

10.5 उच्चतर माध्यमिक स्तर – शिक्षा में यह स्तर सर्वाधिक चुनौती भरा होता है। कक्षा 11वीं, 12वीं में कला एक अनुशासित विषय की ओर उन्मुख होती है। यहां कला शिक्षा से तात्पर्य है सामुदाय की सांस्कृतिक विरासत के बारे में जानना, कला व शिल्प सीखना ,विवेचना एवं कला इतिहास की पूर्ण जानकारी प्राप्त करना। इसके साथ ही कला व शिल्प से संबंधित विभिन्न व्यवसायों के बारे में जानकारी लेना और स्वयं को कला जगत में एक कलाकार, एक रचनाकार, आलोचक, शिल्पी अथवा कला पारखी के रूप में प्रवेश पाने के लिए तैयार करना होता है जिसके लिये सार्थक प्रयास करने होंगे।

11.00 कला शिक्षा की पाठ्यचर्या -

11.1 पूर्व प्राथमिक स्तर – इस स्तर पर बच्चे 3–5 वर्ष के बीच होते हैं और उनमें उच्चस्तरीय ऊर्जा तथा कई प्रकार की जिज्ञासाएँ होती हैं। इस स्तर पर अध्ययन कला के माध्यम से ही होना चाहिए, चाहे वह रेखांकन हो, चित्र हो, पेंटिंग हो, मिट्टी से आकार बनाने का काम हो, गाना गाना हो अथवा अन्य क्रियाएँ या गतियाँ हों।

11.2 प्राथमिक स्तर – प्राथमिक स्तर पर भी कला शिक्षा को सभी विषयों के साथ जोड़ा जाना चाहिए तथा विभिन्न अवधारणाओं को पढ़ाने के लिए एक माध्यम के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए विशेषकर कक्षाओं I, II एवं III में। ठीक इसी तरह और आगे की कक्षाओं में भी बच्चों को कला व शिल्प के विविध रूपों के द्वारा रचनात्मक गतिविधियों में लगाया जाना चाहिए तथा स्कूलों में दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कलाओं के लिए समय की व्यवस्था करनी होगी।

विषयवस्तु, विधियाँ एवं सामग्री – इस स्तर के बच्चों में अपने आस–पास के वातावरण से धारणाओं को खोज कर विकसित करने की क्षमता को बढ़ावा देना चाहिए। वे जो कुछ भी देखते हैं और जिसकी कल्पना करते हैं, अलग–अलग सामग्री एवं तकनीक से चित्रों, रेखांकन, कोलाज, मिट्टी इत्यादि बनाने का प्रयत्न करते हैं जिसकी सराहना की जानी चाहिए। वे रंग, रेखा, डिजाइन आदि से कागज पर आकार बनाने की कोशिश करते हैं। प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों को छोटे–छोटे समूहों में बाँट कर कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इससे इनमें सहयोग से काम करने की भावना आती है। कक्षा I, II, III में राष्ट्रीय गान एवं गीत, छोटी साधारण कविताएँ (मातृभाषा में) बच्चों को सामूहिक रूप से अभिनय के साथ सिखाई जा सकती हैं। देशभक्ति गीत, क्षेत्रीय भाषा के गीत जो पर्व–त्यौहारों में पारंपरिक रूप से प्रचलित हों, सामुदायिक गायन इत्यादि उन्हें सिखाए जा सकते हैं। विद्यार्थियों को आधार, ताल, लय एवं सुर का ज्ञान भी कराया जा सकता है। आस–पास पाई जाने वाली वस्तुओं जैसे बर्तन, धागे, पत्ते, ड्रम आदि से निकलने वाली ध्वनियों के साथ भी वे प्रयोग कर सकते हैं।

कक्षा IV-V में वे सुर, ताल, लय की भी पहचान करना सीख सकते हैं। संगीत एवं नाटक के खेल भी बच्चे खेल सकते हैं, जिसमें उन्हें आनंद की प्राप्ति होती है। क्षेत्रीय भाषाओं, लोरियों, कहावतों इत्यादि के माध्यम से भी उन्हें पढ़ाया जा सकता है। इस स्तर के विद्यार्थी शुद्ध एवं विकृत स्वरों को भी पहचान सकते हैं, और उन्हें सरगम के साथ कुछ सरल अंलकार भी सिखाये जा सकते हैं। कुछ आसान शिल्पों की ओर उनका ध्यान आकर्षित करवाया जा सकता है।

11.3 दृश्य कलाओं की पाठ्यचर्या –

11.3.1 उच्च प्राथमिक स्तर – विद्यालयीन शिक्षा के इस स्तर पर विद्यार्थी थोड़े जटिल माध्यमों एवं विषयों पर कार्य कर सकते हैं। अब तक का उनका अनुभव एवं विकास इस स्तर में आकार लेता है।

विषयवस्तु, विधियाँ एवं सामग्री – उच्च प्राथमिक स्तर में कला शिक्षा के अंतर्गत रेखांकन, चित्रकला, कोलाज, मिट्टी से काम, कठपुतली निर्माण, स्वतंत्र अभिव्यक्ति के विभिन्न तरीकों से कलात्मक वस्तुओं का निर्माण, दृश्य कलाओं की सामान्य धारणाएँ, महान कलाकारों के कार्यो की जानकारी इत्यादि का समावेश होना चाहिए। अवलोकन और अन्वेषण के आधार पर विद्यार्थियों को अपनी कल्पना एवं अभिव्यक्ति के लिए इस स्तर पर प्रेरित किया जाना होगा। उनमें संगठन एवं रूपरेखा, सज्जा की संवेदना विकसित होना चाहिए जिससे उन्हें जीवनपर्यन्त सौंदर्य का आनंददायी अनुभव प्राप्त हो, आस–पास के शिल्पों की ओर भी उन्हें सचेत किया जा सकता है।

11.3.2 माध्यमिक स्तर – माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को दृश्यकला, संगीत, नृत्य अथवा नाटक में से किसी एक का चयन करने की स्वतंत्रता हो जिसमें वे एक निर्धारित स्तर की दक्षता प्राप्त कर सकें। शिल्पों के प्रति अब वे अधिक सजग हो उठते हैं।

11.3.3 उच्च माध्यमिक स्तर – उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा XI, XII) पर कला एक वैकल्पिक विषय के रूप में विद्यार्थियों द्वारा लिया जा सकता है। उपलब्धता के आधार पर प्रत्येक विद्यालय को इसके लिए सुविधाएँ तथा साधन उपलब्ध कराने होंगे। पाठ्यचर्या में ललित कला का विषय, चित्रकला, मूर्तिकला या ग्राफिक्स भी हो सकता है जिसमें सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक कार्यों का प्रावधान रखा जाना चाहिए। इस स्तर पर कला के इतिहास एवं सौंदर्यशास्त्र जैसे विषयों के सिद्धांतों को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। शिक्षकों को अपने परिवेश में निहित कला का दस्तावेजीकरण करना चाहिए। स्कूलों में विभिन्न विधाओं के कलाकारों को आमंत्रित कर शिल्प, कला और संगीत का परिचय कराना एक अच्छा प्रयास हो सकता है। गाँव या परिवेश की कला व शिल्प परम्परा को स्कूल संग्रहालय में एक मॉडल के रूप में दिखाना एक उत्तम गतिविधि सिद्ध हो सकती है। कला व शिल्प को संदर्भ के साथ सभी विषयों में शिक्षण अधिगम सामग्री के रूप में इस्तेमाल करना उचित होगा। कला, शिल्प, संगीत और नृत्य स्कूली पाठ्यचर्या का हिस्सा हो और सप्ताह में इनके लिए कालखंड निर्धारित हो सकते हैं और विषयों में उचित स्थान और समय पर इनका उपयोग किया जा सकता है।

12.00 कला शिक्षा के मूल्यांकन -

यह सुझाव दिया जाता है कि कला शिक्षा में गैर–प्रतियोगी और गैर–तुलनात्मक आधार पर समय–समय पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए जिससे बच्चों के प्रदर्शन में सुधार का आकलन किया जा सके। बच्चों के प्रदर्शन में उर्ध्व वृद्धि (Vertical Growth) की समीक्षा आवश्यक है।

12.1 पूर्व प्राथमिक स्तर – इस स्तर पर मूल्यांकन विवरणात्मक हो जिसमें बच्चों के विकास और व्यवहार का वर्णन हो। शिक्षक मुक्त अभिव्यक्ति और सृजनात्मकता पर पूरे सत्र में निरंतर बल दें और बच्चों का आकलन उसके स्वयं के विकास से करें। यहाँ बच्चे को अधिक उत्साहित किए जाने की आवश्यकता है।

12.2 प्राथमिक स्तर – प्राथमिक स्तर से उच्च माध्यमिक स्तर तक मूल्यांकन की प्रक्रिया महत्वपूर्ण है जिसे वर्ष भर में किया जाना चाहिए। हर सत्र में कुछ बिंदुओं के मापन–स्तर पर विद्यार्थियों के कार्य का आकलन किया जा सकता है। यहाँ कुछ बिन्दु हैं –

- ध्यान से देखते हुए सीखना (अवलोकन)।
- सहजता और मुक्त अभिव्यक्ति।
- अलग–अलग गतिविधियों में भाग लेने की रूचि।
- प्रत्येक बच्चे का समूह कार्य में भाग लेना।

12.3 उच्च प्राथमिक स्तर – बच्चों द्वारा किए गए कार्यों का समय–समय पर आकलन किया गया हो जो उनके प्रगति–पत्र में निम्नलिखित चार या पाँच बिंदुओं वाले मापक पर दिखाया जा सकता है ।

- विद्यार्थियों की भागीदारी।
- सामाजिक मेल–जोल से सीखना –सिखाना।
- कला के बुनियादी तत्वों / सिद्धांतों के प्रति संवेदनशीलता का विकास और समझ।
- प्रयुक्त माध्यमों को समझने में दक्षता।
- अलग–अलग माध्यमों को लेकर प्रयोग करना।

12.4 माध्यमिक स्तर – इस स्तर पर यह सुझाव है कि प्रत्येक टर्म में ग्रेड के साथ आकलन किया जाए। विद्यार्थी के किए गए कार्यो का आंतरिक व बाह्य मूल्यांकन किया जा सकता है।

12.5 उच्चतर माध्यमिक स्तर – मूल्यांकन के कुछ बिन्दु इस प्रकार हो सकते हैं– पोर्टफोलियों के आधार पर ,विभिन्न माध्यमों में कार्य करने की दक्षता, अवलोकन की शुद्धता,अभिव्यक्ति, अवलोकन, रेखांकन में शुद्धता आदि ।

13.00 कला शिक्षा और शिक्षक-शिक्षा -

शिक्षक बच्चों के प्रारंभिक जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अभिभावकों के बाद शिक्षक ही वह वयस्क व्यक्ति होता है जिससे बच्चा अपने उम्र के प्रारंभिक वर्षो में मिलना–जुलना शुरू करता है (लगभग 3 वर्ष में और उसके पश्चात्) और इसी दौर में बच्चों के सीखने और व्यवहार से वह आधार तैयार होता है जिससे वह अपने भविष्य की नींव रखता है। जब हम पाठ्यचर्या में बच्चे के व्यक्तित्व की चर्चा करते हैं तब यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि हम शिक्षक के व्यक्तित्व और शिक्षकों की क्षमता निर्माण पर नजर डालें।

शिक्षक–शिक्षा और शिक्षकों की क्षमता विकास की प्रक्रिया पर जोर देना होगा क्योंकि शिक्षक ही वह मुख्य व्यक्ति होता है जो पाठ्यक्रम को कक्षा में बच्चों तक पहुँचाता है।

पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक स्तर पर कला शिक्षा की पाठ्यचर्या अन्य विषयों के अध्यापन से गहराई से जुड़ी होती है इसलिए कला शिक्षा को सेवापूर्व और सेवाकालीन के स्तर पर शिक्षक शिक्षा और प्रशिक्षण का एक अभिन्न अंग होना चाहिए।

उच्च प्राथमिक स्तर पर विशेषज्ञ और प्रशिक्षित शिक्षक की जरूरत होती है। कला के ऐसे विद्यार्थियों की जरूरत है जो शिक्षण को एक पेशे की तरह अपना लेने में रूचि रखते हों और उनके लिए कला शिक्षा में शिक्षक प्रशिक्षण की ऐसी व्यवस्था हो, जहाँ वे विभिन्न शिक्षण–शास्त्रों, विधियों और शिक्षण–अधिगम और मूल्यांकन की पद्धति सीख सकें।

14.00 शिक्षा में हस्तशिल्प –

हस्तशिल्प अद्‌भुत स्वदेशी प्रौद्योगिक पर आधारित एक उत्पादन प्रक्रिया है। छत्तीसगढ़ में हस्तशिल्प और इससे जुड़े लाखों हस्तशिल्पी पारंपरिक ज्ञान एवं स्वदेशी प्रौद्योगिक के संवाहक है। हस्तशिल्प के इस भंडार को इतिहास, सामाजिक विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन, भूगोल, कला एवं अर्थशास्त्र जैसे विषयों के साथ जोड़ना होगा। यह भी याद रखना होगा कि यह प्रदेश की संस्कृति और अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है। NCF-2005 की अनुशंसा यहाँ भी कारगर हो सकती है, कि हस्तशिल्प को परियोजना के रूप में बेहतर तरीके से पढ़ाया जा सकता है। यह भी सुझाव है कि ग्रामीण इलाकों के जहाँ पहले से हस्तशिल्प व्यवसाय के रूप में है विद्यालयों में हस्तशिल्प की अलग–अलग पाठ्यचर्या हो जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित इन पाठ्यचर्या से हस्तशिल्प व्यवसायों को और आगे बढ़ाया जा सके। शहरी क्षेत्रों में शिल्प की शिक्षा अनुभव के रूप में दी जा सकती है जिससे वह शिल्प से जुड़ी व्यावसायिक गतिविधियों का हिस्सा बन सकें। शिल्पियों को प्रशिक्षक या शिक्षक के रूप में आमंत्रित कर हस्तशिल्प को सीखा जा सकता है। शिल्प के माध्यम से प्राप्त अनुभव उपयोगी और समृद्ध बनाने वाला होता है। अपने हाथों वस्तुओं और तकनीकों से काम करना प्रक्रियाओं को समझने में तथा समस्या समाधान में मदद करते हैं।

आवश्यक उपकरण एवं व्यवस्थाएँ –

- मूल जानकारी देने के लिए प्रशिक्षित शिल्पियों का समूह।
- विभिन्न पृष्ठभूमियों के प्रशिक्षक एवं शिक्षक, जो हस्तशिल्प विषय में रुचि रखते हों।
- विद्यालय में एक ऐसा व्यक्ति हो, जो दिए जाने वाले संसाधनों, परियोजनाओं, बाह्य प्रशिक्षकों, शिल्प प्रदर्शनों और क्षेत्रीय दौरों का समन्वय कर सके।
- एक ऐसी शिल्प प्रयोगशाला हो, जिसमें पर्याप्त जगह, सुविधाएँ हों, और वह कच्चे मालों से युक्त हो।

क्रियान्वयन के कुछ सुझाव इस प्रकार है –

- विद्यालयों में हस्तशिल्प प्रयोगशालाएँ।
- हस्तशिल्प की दृष्टि से विकसित इलाकों में अवकाश के दिनों में शिविर लगाने की व्यवस्था हो, जहाँ हस्तशिल्पकारों के साथ काम करने का अवसर मिल सके।
- हस्तशिल्पकारों (विद्यालय के बच्चों के अभिभावकों) द्वारा व्याख्यान और प्रदर्शन दिए जाएँ।
- राज्य में स्कूलों/जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों/राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् एवं अन्य शैक्षिक संस्थाओं का जुड़ाव, सी.सी.आर.टी., दिल्ली जैसी अन्य कला और अभिनय से जुड़ी अन्य संस्थाओं से हो। स्कूल शिक्षा के साथ–साथ शिल्प कला के प्रति रूचि जगाने के लिए स्कूलों में क्षेत्रीय मेले, स्कूल मेले आयोजित किए जा सकते हैं जिससे कला व शिल्प समुदाय व आयोजन की प्रक्रिया से जुड़ सके।
- शिल्पकार बच्चे जो हस्तशिल्प पढ़ा सकते हों उनके साथ शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के बीच अनुभवों का आदान–प्रदान हो तथा बच्चों को एक–दूसरे के इलाकों में भी ले जाया जाए।
- वार्षिक मेले का आयोजन किया जाना चाहिए, जिसमें बच्चों द्वारा विकसित एवं तैयार उत्पादों को बेचने की व्यवस्था हो।

15.00 कक्षा 1 से 5 तक कला और शिल्प शिक्षा के कुछ सुझाव –

क्रियाकलाप इस प्रकार हो सकते हैं – यहाँ पर सुझाव दिये गये हैं –
प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी –प्रत्येक कक्षा में छात्रों के इच्छा अनुसार निम्नलिखित विषयों पर कार्य किया जा सकता है।

1- मुक्त हस्तांकन (मुक्त चित्रांकन) / Free Hand Drawing
2- वर्ण शिक्षा / Colour Study
3- स्मृति चित्रण / Memory Drawing
4- कोलॉज / Collage
5- मिट्टी से शिल्प रचना / Clay Modelling
6- निर्माण शैली द्वारा शिल्प रचना / Construction

1- मुक्तहस्तांकन (मुक्त चित्रांकन) / Free Hand Drawing

विषय – घर, पेड़, फूल, पक्षी, पशु, मनुष्य आकृति, तालाब, नदी, पर्वत आदि।
उपयोगी सामग्री– पेन्सिल, पेन, पेस्टल, रंगीन चाक, कागज (ड्राईंग पेपर), ब्लैक बोर्ड आदि।
टिप्पणी – सादे कागज पर विद्यार्थियों की अपनी इच्छा अनुसार रेखा और रंगों के द्वारा चित्रांकन कराया जा सकता है।

2- वर्ण शिक्षा / Colour Study

विषय – रंगीन दृश्य जैसे घर, पेड़, फूल, पक्षी, पशु, मनुष्य आकृति, तालाब, नदी, पर्वत, वस्तु आदि।
उपयोगी सामग्री– पेन्सिल, पेन, पेस्टल, रंगीन पेन्सिल, स्केच पेन, कागज (ड्राईंग पेपर), आदि।
टिप्पणी – रंगों के परिचय पर आधारित सहज एंव सरल रंगीन चित्रों को देखकर आकार और रंगों की अनुकृति कराई जा सकती है।

3.स्मृति चित्रण / Memory Drawing

विषय – घर, पेड़, फूल, फल, पक्षी, पशु, मनुष्य आकृति, तालाब, नदी, पर्वत,वस्तु आदि।
उपयोगी सामग्री– पेन्सिल, पेन, पेस्टल, रंगीन पेन्सिल, स्केच पेन, कागज (ड्राईंग पेपर), आदि।
टिप्पणी – आकार और रंगों को स्मृति पर आधारित सहज एवं सरल चित्रों को विद्यार्थियों के सामने एक बार दिखाकर, चित्रों को स्मृति के अनुसार चित्रण करवाया जा सकता है। शिक्षक के निर्देशानुसार या विद्यार्थी की इच्छा से चित्र में संशोधन किया जा सकता है।

4.कोलॉज / Collage

विषय – प्राकृतिक दृश्य–घर, पेड़, फूल, फल, पक्षी, पशु, मनुष्य आकृति, तालाब, नदी, पर्वत, वस्तु मुखाकृति आदि।
उपयोगी सामग्री– पेन्सिल, पेन, हार्ड पेपर सीट / कागज (ड्राईंग पेपर), कैंची, गोंद, पुरानी रंगीन पत्रिका, अखबार, आदि।
टिप्पणी – माऊन्ट पेपर / ड्राईंग पेपर पर रेखाचित्र बनाकर रंगीन कागज जैसे पत्रिका / अखबार, आदि के छोटे–छोटे टुकड़े फाड़कर गोंद से चिपकाकर चित्रण कराया जा सकता है।

5. मिट्टी से शिल्प रचना / Clay Modeling

विषय – इच्छा अनुसार ज्यामितिक आकृति, कोई वस्तु फूल, फल, पक्षी, पशु, मनुष्य आकृति, आदि।
उपयोगी सामग्री– काली या लाल मिट्टी 10"X2" इंच की लकड़ी की बोर्ड, कपड़ा, प्लास्टिक शीट, पानी के लिए पात्र, माडलिंग टूल्स (लकड़ी / बांस या स्टील की छुरी, बाजार में उपलब्ध क्ले मॉडलिंग टूल्स), आदि।
टिप्पणी – मिट्टी से शिल्प रचना के लिए सर्वप्रथम काली या लाल मिट्टी को संग्रहित कर पानी में भिगोकर रखने के बाद कंकड़ और पत्थर छाँटकर मिट्टी को आटे की तरह गूथने के उपरांत सृजन कराया जा सकता है।

निर्माण शैली द्वारा शिल्प रचना / Construction

विषय – इच्छा अनुसार आकृति जैसे पेड़, फूल, फल, पक्षी, पशु, मनुष्य आकृति, कोई वस्तु आदि।
उपयोगी सामग्री– व्यवहारिक वस्तु / अनुपयोगी वस्तु – कार्ड बोर्ड, प्लास्टिक की वस्तु, टूथ पिक, सीपी, आदि जोड़ने के लिए गोंद, अन्य कैंची, छुरी, पेन्सिल, पेन, स्केच पेन, कागज (ड्राईंग पेपर), आदि।
टिप्पणी – व्यावहारिक वस्तु अनुपयोगी वस्तुओं को एकत्रित करके आपस में जोड़कर विभिन्न रूपों की रचना कराई जा सकती है तथा रूपों के अनुसार रंगों का भी प्रयोग किया जा सकता है।

तृतीय, चतुर्थ, पंचम श्रेणी –

प्रत्येक कक्षा में छात्रों के इच्छा अनुसार निम्नलिखित विषयों पर कार्य किया जा सकता है –

1. रेखा चित्र / चित्रकला / Drawing/Painting
2. कोलॉज / Collage
3. साज–सज्जा / Decoration
4. मिट्टी से शिल्प रचना / Clay modeling
5. निर्माण शैली द्वारा शिल्प रचना / Construction

1- रेखा चित्र / चित्रकला / Drawing/Painting

विषय – विभिन्न दृश्य संयोजन जैसे प्रकृतिक दृश्य, फुग्गेवाला, मजदूर, किसान, दैनिक जीवन आदि।

उपयोगी सामग्री– पेन्सिल, पेन, पेस्टल, रंगीन पेन्सिल, स्केच पेन, जल रंग, कागज (ड्राईंग पेपर) आदि।

टिप्पणी – विभिन्न विषयों पर आधारित रेखा और रंगो के द्वारा चित्र संयोजन कराया जा सकता है।

2- कोलॉज / Collage

विषय – प्राकृतिक दृश्य–घर, पेड़, फूल, फल, पक्षी, पशु, मनुष्य आकृति, तालाब, नदी, पर्वत, वस्तु, मुखाकृति, आदि।

उपयोगी सामग्री– पेन्सिल, पेन, हार्ड पेपर, शीट / कागज (ड्राईंग पेपर), कैंची, गोंद, पुरानी रंगीन पत्रिका, अखबार आदि।

टिप्पणी – माउण्ट पेपर पर रेखाचित्र बनाकर रंगीन कागज जैसे पत्रिका / अखबार, आदि के छोटे–छोटे टुकड़े फाड़कर गोंद से चिपकाकर चित्र बनाया जा सकता है।

1- साज–सज्जा / Decoration

विषय – सजावटी आकृति–ज्यामितिक या प्राकृतिक दृश्य, पैटर्न ड्राईंग।

उपयोगी सामग्री– पेन्सिल, पेन, पेस्टल, जल रंग, इंक, ब्रश, ड्राईंग बोर्ड क्लिप, इरेज़र, धागा सुई, रस्सी, कैंची, गोंद, रंगोली, कागज, आदि।

टिप्पणी – विभिन्न सामग्रियों से सजावटी चित्रण जैसे सूखी या गीली रंगोली को हाथों या ब्रश के द्वारा आंगन में सजावट कराई जा सकती है।

मिट्टी से शिल्प रचना / Clay modeling

विषय – इच्छा अनुसार कोई वस्तु, फूल, फल, पक्षी, पशु, मनुष्य आकृति आदि।

उपयोगी सामग्री– काली या लाल मिट्टी 10"X2" इंच की लकड़ी की बोर्ड, कपड़ा, प्लास्टिक सीट, पानी के लिए पात्र, माडलिंग टूल्स (लकड़ी / बांस या स्टील की छुरी, बाजार में उपलब्ध क्ले मॉडलिंग टूल्स), आदि।

टिप्पणी – मिट्टी से शिल्प रचना के लिए सर्वप्रथम काली या लाल मिट्टी को संग्रहित कर पानी में भिगोकर रखने के बाद कंकड़ और पत्थर छॉटकर, मिट्टी को आटे की तरह गूथने के उपरांत अपनी इच्छा से ज्यामितिक आकृतियों, विभिन्न वस्तु, फल, फूल आदि का सृजन कराया जा सकता है।

2- निर्माण शैली द्वारा शिल्प रचना / Construction

विषय – इच्छा अनुसार आकृति जैसे पेड़, फूल, फल, पक्षी, पशु, मनुष्य आकृति, अन्य कोई वस्तु आदि।

उपयोगी सामग्री– व्यावहारिक वस्तु अनुपयोगी वस्तु – कार्ड बोर्ड, प्लास्टिक की वस्तु, टूथ पिक, सीपि, आदि जोड़ने के लिए गोंद, सुई धागा, स्टेपलर, अन्य कैंची, छुरी, पेन्सिल, पेन, स्केल, पेन, कागज (ड्राईंग पेपर) आदि।

टिप्पणी – व्यावहारिक वस्तु अनुपयोगी वस्तुओं को एकत्रित करके आपस में जोड़कर विभिन्न रूपों की रचना कराया जाना चाहिए तथा रूपों के अनुसार रंगो का भी प्रयोग किया जा सकता है।

टीप :– 1. कक्षा क्रम से विषय के स्तर को बढ़ाया जाए।

2. प्रत्येक कक्षा में छात्र–छात्राओं के इच्छा अनुसार विषयों पर कार्य किया जा सकता है।

3. तीन माह के अन्तराल में प्रत्येक कक्षा की कला प्रदर्शनी आयोजित की जाए एवं कला का मूल्यांकन भी किया जाए।

16.00 बच्चों में कल्पनाशीलता के विकास हेतु सुझाव व गतिविधियाँ –

1. आलू, भिण्डी इत्यादि से छापें लगाना (ब्लाक प्रिटिंग)
2. धागे से चित्रकारी
3. रंगों से स्याही से डिजाइन (पैटर्न) बनाना
4. रंगोली और अल्पना
5. स्प्रे वर्क
6. कोलाज के कार्य
7. ओरेगेमी
8. कागज/आरगन्डी कपड़े के फूल
9. चाकलेट पन्नी से गुड़िया, तोरण बनाना
10. सिरेमिक पावडर से नमूने बनाना
11. कागज से फिरकी, खिलौने बनाना
12. मेंहदी लगाना
13. कठपुतली बनाना, कटआऊट तैयार करना ।
13. पेपर मेशी के कार्य करना
14. मुखौटे तैयार करना
15. संगीत– बालगीत, प्रेरणागीत, प्रार्थनाएं, कविताएँ अभिनय के साथ गाना, (रोल प्ले करना)
16. पशु –पक्षी की चालों एवं आवाजों की नकल करना
17. वाद्य यंत्र बजाना
18. फैंसी ड्रेस
19. विभिन्न प्रकार की स्क्रेप बुक तैयार करना (टिकिट, माचिस, फूल पत्तियां, विभिन्न प्रकार के नृत्य के चित्र वाद्य यंत्र, पर्यटन स्थल, तीज त्यौहार, गहने, महापुरूष आदि के स्कैप बुक)
20. चित्रकारी व पेंटिंग
21. मिट्टी के काम
22. सिलाई/कढ़ाई/बुनाई
23. नाटक व रंगमंच
24. कबाड़ से कलाकृतियाँ (पुरानी वस्तुओं से समाग्री निर्माण)
25. तस्वीरों में निहित दृश्यों, चित्रों पर कहानी या चर्चा
26. प्रचलित गानों की धुन गुनगुनाएं और गाना पहचानने को कहना।

परिशिष्ट

कुछ गतिविधियाँ इस प्रकार भी हो सकती हैं –

1. बच्चों से उनकी खाने, पहनने (पसंद–नापसंद) पर बातचीत करना।
2. विभिन्न प्रकार की वस्तुओं में आकार एवं रंगों की पहचान करना जैसे रंग–हरा, लाल–पीला, हरा–नीला इनसे संबंधित खेल खिलाना।
3. अभिनय करवाना जिसमें उन्हें अलग–अलग निर्देश दें, घर के सदस्य माता, पिता, दादा, दादी, अपनी टीचर, मित्र या अन्य किसी की नकल करना।
4. सोचे और बोले
   (1) अगर पेड़ पर टाफी लगी हो तो
   (2) अगर पेड़ –पौधे चलने लगे
   (3) यदि हमारे पंख होते
   (4) हम सभी राजा होते
   (5) आप मुख्यमंत्री / प्रधानमंत्री होते
5. अंतर ढूंढों (दो एक जैसी तस्वीरों जिनमें कुछ अन्तर हों को दिखाकर अंतर ढूंढने को कहना)
6. एक शब्द में शुरू करके प्रत्येक बच्चे से एक–एक अलग वाक्य बुलवाना।
7. आकृति पूरी करना – एक आकृति देकर दूसरी आकृति बनवाना।
8. अधूरी आकृति पूर्ण करना (जानवरों के चित्रों आदि की आकृति)
9. अभिनय करना(बोले गये– वाक्यों पर अपने चहेरे पर भाव लाना। (रोना, हँसना, क्रोध करना मुस्कराना, मचलना।)
10. पशु पक्षी के चालों की नकल करना।
11. बिंदुओं से आकृति पूर्ण करना।
12. पहेलियाँ –पूछना (बच्चों से, फल, सब्जी, परिवेश की वस्तुओं से सम्बंधित पहेलियां बूझने व पूछने हेतु कहना)
13. पसंद, नापसंद पूछना
14. फलों / वस्तुओं के क्या क्या उपयोग? स्वाद, रंग, आकृति, मौसम आदि पर चर्चा
15. प्रचलित गानों की धुन –गुनगुनाएं और गाना पहचानने को कहें।
16. कविता, गीत आदि पर ताल से थिरकने को कहें।
17. वाद्य यंत्रों की आवाज पहचानने को कहना (हारमोनियम, तबला, ढोलक, घुंघरू झांझ, घंटी, बांसुरी)
18. स्थानीय गीत, नृत्य, पारंपरिक त्यौहारों के बारे में बच्चों से जानकारी लेना व बताना, गीतों, नृत्यों का प्रदर्शन करवाना।
19. भित्ती परिवेश के चित्रों का अवलोकन कराना व उनके घरों में त्यौहारों पर कौन–कौन से चित्र बनाये जाते हैं उनका अभ्यास कराना।

संदर्भ –

1.पाठ्यचर्या नवीकरण के लिए शिक्षक–शिक्षा राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र ,राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,नई दिल्ली।

2.राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,नई दिल्ली।

3.छत्तीसगढ़ समग्र, संस्करण – प्रथम 2013 , छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी पी–3 पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय परिसर, रायपुर (छत्तीसगढ़)

4.डिप्लोमा इन एजुकेशन (डी.एड.) प्रथम वर्ष हेतु, विषय – कला व कला शिक्षा, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् रायपुर, छत्तीसगढ़

5.हस्तशिल्पों की धरोहर ,राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नयी दिल्ली।

6.कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद नयी दिल्ली।

7.कला से सीखना ,जेन साही एवं रोशन साही, एकलव्य का प्रकाशन

8.प्राथमिक शाला में कारीगरी की शिक्षा , गिजू भाई – साक्षरता केन्द्र दिल्ली

9.समेकित पाठ्यपुस्तक (गणित–पर्यावरण) ,कक्षा – 5, भाग दो, 2014–15 राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, रायपुर, छत्तीसगढ़

10.शिक्षा का वाहन – कला, देवी प्रसाद – नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्, छ.ग. रायपुर

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, छत्तीसगढ़, रायपुर

STATE COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING CHHATTISGARH, RAIPUR

2016 & 17